

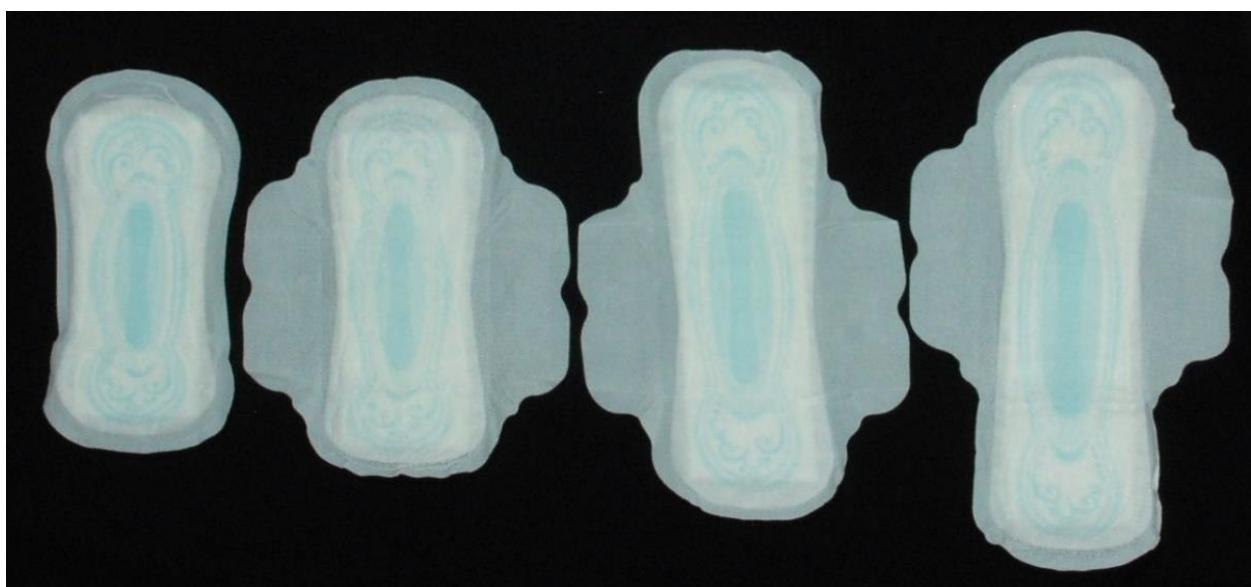
हर महीने निकलने वाले सवा अरब सेनेटरी पैड्स के कचरे का आखिर होता क्या है ?

भारत की कुल आबादी में इस समय ३६ करोड़ ज्ञात मेस्ट्रूएटर्स (वे लोग, जिन्हें माहवारी होती है) हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे -०५ (NFHS-05) के अनुसार इनमें से १५ से २४ साल की करीब ६२% महिलाएं और किशोरियां माहवारी प्रबंधन के लिए सेनेटरी पैड्स का प्रयोग करती हैं। एक अनुमान के मुताबिक भारत में तकरीबन १४ करोड़ मेस्ट्रूएटर्स नियमित रूप से सेनेटरी नेपकीन का प्रयोग करते हैं, जिन्हें एक प्रयोग के बाद फेंक दिया जाता है। यदि एक महिला एक माहवारी चक्र में ८-१० पैड्स भी प्रयोग करती है तो हर महीने भारत में तकरीबन १ अरब २० करोड़ से ज्यादा पैड्स इस्तेमाल होते हैं।

भारत में सेनेटरी नेपकीन के प्रयोग को स्वास्थ्य के लिहाज से स्वच्छ उपाय माना जाता है, किन्तु इस्तेमाल करके फेंके गए कचरे का क्या होता है या इनके उपयोग के बाद इस से पैदा हुए कचरे से कैसे निपटा जाए, इस विषय पर बहुत कम ही आवाजें सुनाई दे रही हैं। लोपेज़ मरियाना द्वारा वर्ष २०२० में किये गए एक अध्ययन ("A Study of the Disposal of Menstrual Products" http://hummedia.manchester.ac.uk/institutes/gdi/research/SIUYV_A5_Booklet_2021_WEB_Spreads.pdf. 2020) के अनुसार माहवारी के दौरान उपयोग करके फेंके गए कचरे को सड़ने गलने (डीकम्पोज़) होने में ५००-८०० साल का समय लगता है।

किन्तु हकीकत यह है कि इसमें मौजूद प्लास्टिक नष्ट नहीं होकर महीन टुकड़ों में बंट जाते हैं और मिट्टी-पानी को प्रदूषित करते हुए हमारे पानी, भोजन में शामिल होकर हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। अगर इन पैड्स को जलाया जाता है तो सही उच्च तापमान नहीं होने की स्थिति में ये ज़हरीले रसायन (डाइ-ओक्सीन और प्युरन आदि) छोड़ते हैं, जो पर्यावरण और मानवीय फेफड़ों पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। ये कैंसर के प्रमुख कारणों में से एक भी है।

ऐसा नहीं है कि सरकार इस दिशा में नहीं सोच रही। ब्यूरो ऑफ़ इन्डियन स्टेंडर्ड के अंतर्गत सरकार ऐसी नीति बनाने की बात कर रही है, जिसमें बायोडीग्रेडेबल तत्वों के अधिक से अधिक उपयोग की बात की जा रही है। यद्यपि भारत में कई कम्पनियां दावा करती हैं कि उनके द्वारा निर्मित पैड्स अधिकतम बायो-डीग्रेडेबल हैं किन्तु हकीकत इस से कोसों दूर है। अभी तक पैड्स के अन्दर मौजूद सेल्युलोज (वुड पल्प) को कवर करने वाली परत प्लास्टिक तत्वों से ही बनती है। इसका सस्ता विकल्प नहीं खोजा जा सका है।



एक सेनेटरी पेड में क्या क्या होता है ?

क्या कभी हमने सोचा है कि किसी सेनेटरी पेड (या डायपर) में कौन कौन से पदार्थ शामिल होते हैं? बाजार में मौजूद ज्यादातर सेनेटरी पैड्स सेल्युलोज (अर्थात् ब्लीच की गयी बुड़ पल्प/लकड़ी की सूखी लुगदी), ज्यादा सोखने वाले पोलीमर (सुपर अब्जार्मेंट पोलीमर- SAP), प्लास्टिक कवर और जेल (या गोंद जो आसानी से डीकम्पोज़ नहीं होते) जैसे कई पदार्थों से मिलकर बनते हैं। इस ज्यादा सोखने वाले पोलीमर को जलाने पर होने वाला वायु प्रदूषण सबसे ज्यादा हानिकारक है। उदयपुर में माहवारी-जागरूकता पर काम करने वाली डॉ. लक्ष्मी मूर्ति से साभार प्राप्त इन २ चित्रों के द्वारा हम समझ सकते हैं कि किसी सेनेटरी पेड में कितने बड़े स्तर पर प्लास्टिक या उसके जैसी सामग्री मौजूद है, जो आसानी से सड़ती- गलती (डीकम्पोस्ट) नहीं।



सोच से परे है पर्यावरण को होने वाला नुकसान

आइये, कुछ और चित्रों पर गौर करते हैं। पुणे में कार्यरत "कागद कच पत्रा काश्तकारी पंचायत" संस्था ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि शहरों में मेन-होल्स के चोक होने में प्लास्टिक की सबसे बड़ी भूमिका है। इनमें भी इस्तेमाल करके फेंके गए सेनेटरी पैड्स और डायपर पानी के सम्पर्क में आकर फूल जाते हैं और बड़े बड़े नालों को जाम कर देते हैं। उल्लेखनीय है कि टाटा ट्रस्ट और भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान, चेन्नई की साल २०१८ की एक रिपोर्ट के अनुसार केवल तमिलनाडु राज्य में हर साल अनुमानित १२ सफाई कर्मियों की मृत्यु मेन-होल की सफाई के दौरान या बाद में सम्बंधित कार्य से हुई बीमारियों के कारण होती है। महाराष्ट्र में भी यही स्थिति है।

साल २०१९ की रिपोर्ट के अनुसार पुणे महानगरपालिका क्षेत्र में प्रतिदिन १६०० टन कचरा निकलता है। इस कचरे में अनुमानित ६७-७० टन सेनेटरी पैड्स और डायपर होते हैं। अर्थात् शहरी क्षेत्रों से निकलने वाले कुल कचरे में ५-८% कचरा नेपकीन और डायपर का होता है। उदयपुर के शुचि अभियान के अनुसार उनके द्वारा शहर से एकत्र किये जाने वाले कुल कचरे में भी ६-८% सेनेटरी पैड्स होते हैं। झुग्गियों में रहने वाले या कचरा बीनने वाले लोग सेनेटरी पैड्स के कचरे को असुरक्षित तरीके से एकत्र करते हैं, ऐसे में उन्हें भी कई बीमारियाँ होने का खतरा हमेशा रहता है। उदयपुर



की संस्था जतन के अनुसार छोटे नगर पालिका क्षेत्रों में कचरा निस्तारण की सही व्यवस्था नहीं होने के कारण ज़मीनी क्षेत्रों में बड़े स्तर पर कचरा फैलता रहता है। बड़े शहर अपने कचरे का निस्तारण करने के लिए आस-पास के कस्बाई या ग्रामीण क्षेत्रों की ज़मीन का उपयोग करते हैं। दिल्ली, बंगलौर और मुंबई जैसे बड़े शहरों से रोज़ निकलने वाले कचरे के बड़े बड़े पहाड़ (लैंड फिल) दूर से देखे जा सकते हैं। यहाँ अचानक जलने वाली या जान बूझकर जलाई जाने वाली आग से उठने वाले ज़हरीले धुए के प्रदूषण पर तो सैकड़ों अध्ययन सामने आ चुके हैं।

क्या इन्सीनिरेटर है एक विकल्प?

कई अध्ययन बताते हैं कि इन्सीनिरेटर का सही उपयोग कई स्थानों पर नहीं हो रहा। ८०० डिग्री के नियत तापमान पर पैड्स नहीं जलाये जाते। पैड्स की प्लास्टिक को भी साथ में जला दिया जाता है। इस से केवल प्रदूषण का प्रकार बदल रहा है। जलाने के बाद बची राख का भी सही निस्तारण नहीं हो रहा। कम दाम वाले इन्सीनिरेटर सही प्रकार से काम नहीं करते और इस से खतरनाक गैसें उत्सर्जित होती हैं। मुंबई की एक संस्था द्वारा वृहन्मुम्बई महानगर पालिका द्वारा कई स्कूलों और मॉल में लगाये गए इन्सीनिरेटर की जांच की गयी तो वे भी ठीक से काम करते हुए नहीं मिले।

क्या हो सकते हैं विकल्प:

मेसट्रॉफर्स के लिए:

- माहवारी प्रबंधन के लिए उपलब्ध विभिन्न उत्पादों की पहचान (इन्फॉर्म चॉइस) और उनके उपयोग और निस्तारण की पूरी जानकारी हो।
- बाज़ार में उपलब्ध बायो-डीग्रेडेबल माहवारी उत्पादों तथा पुनः उपयोग योग्य (री-यूजेबल) उत्पादों के बारे में पूरी जानकारी हो।
- उपयोग के बाद पैड्स को खुले में नहीं फेंकें। इन्हें अखबारी कागज़ में लपेट कर कचरा पात्र में डाले और कचरा एकत्र करने वाली गाड़ी में “सेनेटरी पैड्स” वाले बॉक्स में डालें।
- माहवारी पर खुलकर बात हो, ताकि इस से सम्बन्धित सभी मुद्दों पर भी खुलकर बातचीत हो सके।

कम्पनियों के लिए :

- पैड्स निर्माण में अच्छे कच्चे माल का उपयोग करें। बेहतर सेल्युलोज (वुड पल्प) का प्रयोग करें, जिसे कम से कम और कालिटीपूर्ण केमिकल से ब्लीच किया गया हो।
- पैड्स के कवर पर उपयोग और निस्तारण की पूरी जानकारी हो।
- पैकिंग में प्लास्टिक का उपयोग कम से कम किया जाए और अन्य पर्यावरण के फायदेमंद विकल्पों पर विचार हो। इसके लिए कम्पोस्टीबल कच्चे माल पर भी विचार हो, जो बाद में खाद में बदल जाए।
- ओक्सोडीग्रेडेबल या फोटो-डीग्रेडेबल अर्थात् सूरज की रोशनी में नष्ट होने वाले प्लास्टिक का प्रयोग नहीं करें। यह असल में नष्ट नहीं होकर माइक्रो प्लास्टिक या महीन कणों में बदल जाता है। ये पशुओं और इंसानों के लिए ज्यादा घातक है। यूरोप के कई देशों में इस पर प्रतिबन्ध भी लगाया जा चुका है।
- पैड्स के साथ डीस्पोजेबल बैग भी उपलब्ध करवाया जाए, ताकि कचरा एकत्र करने वालों को इसकी पहचान करने और अलग करने (सेप्रिकेशन) में आसानी रहे।
- पैड्स बनाने वाली कम्पनियां इस कचरे को कम करने की दिशा में भी आगे आयें। इस पर अधिक रीसर्च के लिए सोचें।

नगर पालिकाओं के लिए:

- कचरा एकत्र करने वालों को सभी सम्बंधित सुरक्षा साधन उपलब्ध करवाए जाएँ।
- कचरा एकत्र करने वाले वाहनों में सेनेटरी पैड्स और डायपर एकत्र करने के लिए अलग से एक डिब्बा लगाया जा सकता है। इंदौर नगर निगम ने इस दिशा में पहल की है।
- तीन रंग के कचरा पात्र शहर में लागू करने पर जोर दें। लोगों और समुदाय में व्यवहार बदलाव (बिहेवियर चेंज) की दिशा में भी काम करें।
- जागरूकता निर्माण, निस्तारण के सही तरीके आदि के लिए नियमित केम्पेन चलायें।
- सेनेटरी नेपकीन के सही निस्तारण की दिशा में सोचा जाए। इस कचरे का लैंड फिल में जाना ही सही निस्तारण नहीं है।
- वैज्ञानिक विधि द्वारा केमिकल और मेकेनिकल प्रोसेस की दिशा में सोचा जा सकता है।



बहरहाल भारत जैसे बड़े देश में केवल नीति बनाकर इस काम को नहीं किया जा सकता। इस दिशा में एक व्यापक सोच के साथ ही आगे बढ़ा जा सकता है। जिस देश में अभी माहवारी जैसे विषय पर ही चुप्पी हो, वहां समुदाय और स्थानीय नगर निकायों को लेकर काम करना एक अलग प्रकार की चुनौती है। बायोडिग्रेडेबल उत्पाद बनाने से उसकी कीमत बढ़ने का अदेश है। इस स्थिति में क्या मेंसटूप्टर उन्हें खरीद पायेंगे ये भी एक यक्ष प्रश्न है।

हालाँकि भारत सरकार ने जिस प्रकार से स्वच्छता के प्रति एक सकारात्मक सोच निर्माण की दिशा में काम किया और घर घर में शौचालय निर्माण की दिशा में आगे बढ़ी, उन अनुभवों को देखते हुए यह असंभव भी नहीं लगता। शहरों में स्वच्छता अभियान और वेस्ट मैनेजमेंट को अगर सरकारें लागू करवा सकती हैं तो माहवारी उत्पादों के सही निस्तारण की दिशा में भी सरकरें और स्थानीय निकाय आगे ज़रूर बढ़ सकते हैं। ऐसे में यह भी आवश्यक है कि लोग कचरे को अलग अलग कचरा पात्र में डालने की आदत भी सीखें। सबको अपनी भूमिका के बारे में सोचना होगा, तभी मेंसटूप्टर का स्वास्थ्य, पर्यावरण और समुदाय के हित साथ में सध सकेंगे।

आलेख: ओम प्रकाश,

(इकली साउथ एशिया द्वारा संचालित अर्बन95 प्रोग्राम, उदयपुर में कार्यरत)